विस्तार पत्रक - रा.उ.अनु.के./2017/05

ऊँट को नियंत्रित करने के तरीके

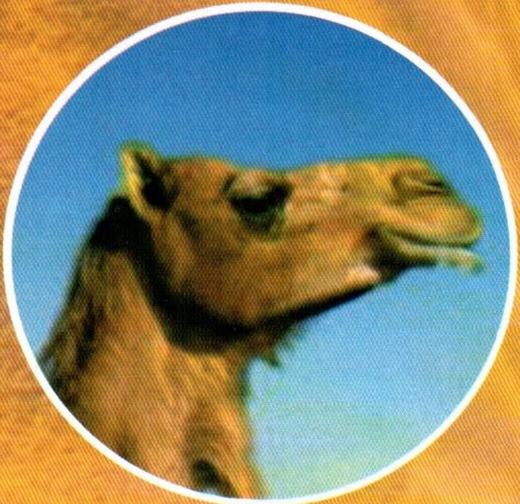

राजेश कुमार सावल
बलदेव दास किराडू
अविनाश कुमार शर्मा
नेमीचंद बारासा
एन. वी. पाटिल

भाकृअनुप
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
बीकानेर

आमुख- पशु और मानव का सदियों से गहरा नाता रहा है। दोनों ने एक दूसरे के परिपूरक बनकर लम्बी यात्रा तय की हैं। जहां मानव, सभी जीव जंतुओं एवं प्राणियों में अपने विवेक-बुद्धि के बलबूते श्रेष्ठता सिद्ध कर पाया तथा सतत प्रक्रिया द्वारा उसने हिंसक पशुओं को भी अपने नियंत्रण में लेने की महारथ हासिल की है वहीं पशुओं की अनगिनत प्रजातियां अभी भी अपने मूल स्वरूप में रहते हुए प्रकृति की गोद में खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही है। परंतु कई चौपाया पशु प्रजातियों यथा-गाय, भैंस, भेड़, बकरी, गधा, कुत्ता, घोड़ा तथा ऊँट आदि ने अपनी स्वभावगत आदतों व मानवीय निकटता, उपयोगिता एवं नियंत्रण के रहते, अपना प्राकृतिक आवास छोड़कर मानव निर्मित घरों को अपना स्थायी आश्रय-स्थल बनाना स्वीकार कर लिया। नतीजतन इन्हें आगे चलकर पालतू जानवरों के रूप में देखा जाने लगा। भिन्न-भिन्न जलवायु व भौगोलिक परिस्थितियों में मानवीय अपेक्षाओं पर खरा उतरने के कारण इन पशुओं को उपयोगिता अनुरूप महत्व भी दिया गया।

इसी कड़ी में ऊँट को रेगिस्तान के पारिस्थितिकी तंत्र में बखूबी अनुकूलनता की विशेषता ने सबसे उपयुक्त पशु का दर्जा दिलाया। आवागमन तथा खेतीबाड़ी इत्यादि के अनेकानेक पारंपरिक कार्यों में ऊँटों का प्रयोग किया जाता है। भारत में उष्ट्र प्रजाति की उत्पत्ति, विकास एवं उष्ट्र पालन व्यवसाय से जुड़ी खानाबदोश जातियों विशेषकर 'राईका' सुमदाय के संबंध में कई उल्लेख मिलते हैं। राईका समुदाय तथा कुछेक जातियों में इस विशालकाय पशु को बड़ी आसानी से काबू में करने के मानों जन्मजात गुण विद्यमान है जो इस अनुभूत ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करते आ रहे हैं।

इसी कड़ी में केन्द्र द्वारा 'ऊँटों को नियंत्रित करने के तरीके' विषयक इस लघु पुस्तिका द्वारा ऊँटों का सुरक्षित एवं कुशल प्रबंधन करने संबंधी महत्वपूर्ण व उपयोगी जानकारी देने का प्रयास किया गया है। आशा है किसान भाइयों, अनुसंधानकर्ताओं, पशु चिकित्सकों, पशुधन सहायकों, विद्यार्थियों के लिए यह लघु पुस्तिका उपयोगी सिद्ध होगी।

रस्सी के प्रकार - ऊँटों को विभिन्न कार्यों एवं उनके रखरखाव जैसे पोषण, प्रजनन, सवारी, परिवहन एवं उपचार इत्यादि हेतु सूत, मूंज, पैराशूट, पशुओं के बालों (जट) से बनाई गई रस्सी आदि का उपयोग किया जाता है। रोही/ जंगल आदि खुले स्थानों में खीम्प को बट कर बनाई हुई रस्सी भी इस्तेमाल की जा सकती व पशु को बांधा जा सकता है।

ऊँट को मुंह द्वारा काबू में करना - ऊँट को मुंह द्वारा काबू में करने के लिए इसकी नासिका पर रस्सी फेंक कर रस्सी के दोनों किनारे को नीचे की तरफ झुकाकर खींचिए तथा पशु के निचले होंठ को भी पकड़ लें। इससे ऊँट, अपने मालिक की मजबूत पकड़ में आ जाता है। प्रजनन काल में झूंट (रट) में आए नर ऊँट को नथ लगाकर आसानी से काबू में लाया जा सकता है।

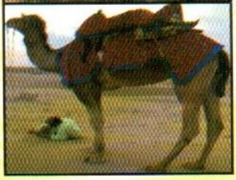

मोरखा लगाना- ऊँटों को मोरखा बाँधने के लिए पहले उनकी थूथन के ऊपर रस्सी डालकर काबू में कर लें। फिर ऊपर व नीचे वाले होंठ को हाथ से पकड़े। अब रस्सी के गाँठ बांध कर कान के ऊपर से दूसरी तरफ रस्सी को उस गाँठ में से निकालिए। इसके पश्चात पशु के कान के पीछे गर्दन पर रस्सी की एक छोटी-सी गांठ बांधे, जिसे 'जाड़िया' कहा जाता है, फिर एक गांठ जबड़े के नीचे की ओर से दूसरी तरफ उसी स्थान पर जबड़े को बांधे। लम्बी रस्सी को पीछे बंधी हुई रस्सी में से निकालकर मोरखा को थोड़ा तंग करें ताकि पशु पर पकड़ मजबूत हो जाए।

ऊँटों में टौंण लगाना - ऊँट जो कि गाड़े/ सवारी आदि के लिए उपयोग में लिए जाते हैं, उनकी नासिका में टौंण डाल दी जाती है। इस टौंण में सूत / पैराशूट की पतली रस्सी बांध दी जाती है। इससे पशु को आसानी से वश में कर इस्तेमाल किया जा सकता है।

ऊँट के अगले पैर (पग) बांधना- किसी भी बीमार व घायल ऊँट का खड़ी अवस्था में ही उपचार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पशु के आगे वाले एक पैर व टखने के बीच में रस्सी डाल कर उस पग को ऊपर की ओर उठाएं। फिर उसे पैर के ऊपर वाले हिस्से से बांध दें। इससे पशु को सरलता से नियन्त्रित कर इलाज किया जा सकता है।

ऊँट के अगले दोनों पैर बांधना - ऊँट को बैठाकर उसका उपचार एवं प्रजनन संबंधी अन्य कार्यों हेतु दोनों पैर को बांधना चाहिए। इसके लिए एक पैर बांधने वाली प्रक्रिया के अनुरूप दूसरा पैर भी बांधा जाए। इससे पशु अगले दोनों घुटनों के बल बैठ जाता है जिससे पशु के सामने वाले शरीर के हिस्से/पीठ पर दवाई लगाई जा सकती है।

ऊँट को नियंत्रित करने के तरीके

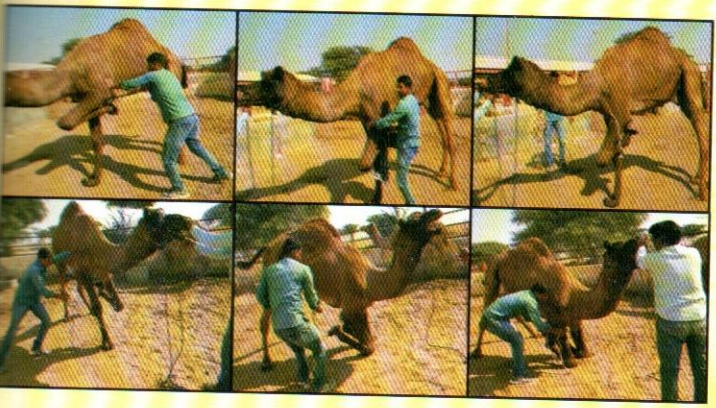

ऊँट के पिछले हिस्से में रस्सी बांधना - ऊँट के पीछे वाले हिस्से को बाँधने के लिए रस्सी को टांगों के बीच से निकालकर शरीर के पीछे वाले हिस्से से बांध देना चाहिए ताकि पशु अपनी पीछे वाले पैरों से ऊपर उठ नहीं सके। ऐसे स्थिति में अगर आगे की टांगे भी बंधी हुई हों तो पशु के शरीर का इलाज, चोपड़ना, ऊन कतराई इत्यादि कार्य आसानी से किए जा सकते हैं। अगर पीछे वाले पैर व शरीर ना बांधा जाए तो ऊँटनी को संभोग के लिए तैयार किया जा सकता है।

दावण बांधना - अगर पशु को खुले में चरने के लिए छोड़ा जाना हो तो उसके अगले दोनों पैर (पंजों से थोड़ा ऊपर की तरफ) बाँधने से पशु अधिक दूरी तय नहीं कर पाता है, उसे वापस पकड़ना आसान हो जाता है। साथ ही इससे ऊँट किसी ऊँटनी से संभोग नहीं कर पाता।

लंगर बांधना - एक गांव से दूसरे गांव में 15-20 ऊँटों को ले जाते समय शरारती ऊँट के एक तरफ के दोनों पैर रस्सी से बांध देते हैं जिससे यह ऊँट मालिक को परेशान नहीं करता है तथा एक पालक/व्यक्तिद्वारा पशुओं को आसानी से गन्तव्य स्थल पर ले जाया जा सकता है।

भागते/चलते हुए पशु को रस्सी का चोकोर बनाकर काबू में लिया जा सकता है। इसके लिए रस्सी को पिछली टांगों में वापस निकाल कर टांगों को मजबूती से जकड़ा जाता है, अगर और भी मजबूती से बांधना हो तो आगे वाली टांगों को बांधने से पशु नियन्त्रित

अवस्था में आ जाता है। इससे वह अपनी पीछे वाली टांगों से ऊँट पालक को नुकसान नहीं पहुंचा सकता तथा इससे पशु का इलाज भी आसानी से किया जा सकता है। परन्तु ऊँट द्वारा मुंह से वार करने की आशंका में सावधानी बरती जानी चाहिए।

पैखड़ा बांधना - यह छोटे बच्चों/टोरडी/टोरडियों को दुधारू ऊँटनी से 4-5

घंटे दूर रखने के लिए पशु के अगले पैर के निचले हिस्से (पैखड़ा) को बांध दिया जाता है। साथ ही जो ऊँट/ऊँटनी मुंह पर बंधी रस्सी को बार- बार काट लेते हैं, उनके इस बुरे स्वभाव से बचने के लिए पैखड़ा बांध देते हैं जिससे वह रस्सी को नहीं काट पाता है।

दुधारू ऊँटनियों को बांधने के विभिन्न उपाय - टोरडिए को दूध पीने से बचाने के लिए ऊँटनी के थनों को कपड़े से (बिजिया) से बांध देना चाहिए।

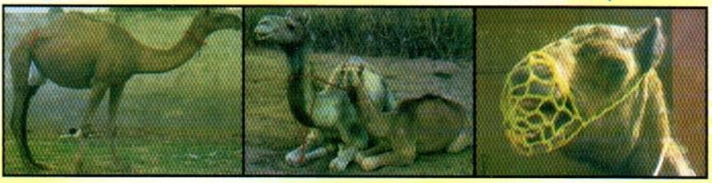

टोरडिए को दूध पीने से रोकने के लिए ऊँटनी व उसके बच्चे को साथ में बांध दिया जाता है ताकि बच्चा दूध ना पी सके। इस हेतु टोरडिए के मुंह पर छिक्का भी बांधा जा सकता है।

नैना बांधना - दूध निकालने से पहले ऊँटनी की पिछले दोनों टांगों को बांध दिया जाना चाहिए। ऐसा करने से दूध दूहने वाले व्यक्ति को आसानी होती है अन्यथा पिछली टांगों को पशु पटकता रहता है या दूध दुहने वाले को अपनी टांग से चोटिल कर कर सकता है।

प्रायः जंगल में चराने के लिए ऊँट पालक अकसर छोटी रस्सी के टुकड़े अपने साथ रखता है। इस हेतु सूत की रस्सी का अकसर इस्तेमाल किया जाता है ताकि समय आने पर पशु को दूध निकालने के लिए बाँधा जा सके या उसके घुटनों को बांध कर प्रजनन/दवाई देने के लिए बैठाया जा सके।

पूंछ (माकड़ा) बांधना - गाड़े में लगाए हुए ऊँट की पूंछ को बांए तरफ पिलाण के साथ बांध दिया जाता है, इससे ऊँट के बार-बार पूंछ को हिलाने/पीछे की ओर मारने से पशु के उसके साथ लगे गाड़े से चोट लगती है जिससे घाव हो सकता है। इसी तरह सवारी के लिए सजाए गए ऊँट की पूंछ भी बांध दी जाती है। माकड़ा बांधने से गन्दगी ना करें तथा सजावट को खराब न करें।

पिलाण बांधना - सवारी हेतु ऊँट को तैयार करने के लिए उसे पहले बैठाया जाता है। पहले एक आचे चादर डालकर फिर गद्दी उसकी पीठ पर रखी जाती है। फिर पिलाण रखा जाता है उसके पश्चात पिलाण में लगी हुई पेटियों को बांध दिया जाता है। अन्त में उसकी पूँछ को बाँधा जाता है ताकि ऊँट पर सवारी की जा सके। अगली पेटी ऊँट की उरास्थि हड्डी पीछे होती है व दूसरी उसके गुल्ले से पहले बाँधा जाता है

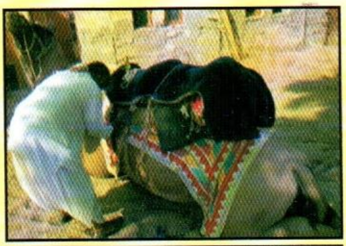
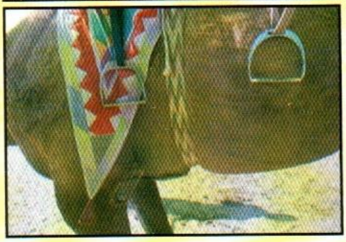

निष्कर्ष : ऊँटों में काबू करने के सचित्र बताए गए उपरोक्त तरीके पशु पालक भाइयों, अनुसंधान कार्यों में लगे वैज्ञानिकों, पशु चिकित्सकों, विद्यार्थियों को उँटों से लिए जाने वाले विभिन्न कार्यों में सहायता प्रदान कर सकते हैं। संबंधित व्यक्ति द्वारा व्यावहारिक स्तर पर भी पारंगत व्यक्ति के समक्ष सीखने/जानने का प्रयास किया जाना चाहिए।

प्रकाशक

निदेशक

भा. कृ. अनु. प. - राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

लेखक

राजेश कुमार सावल, बलदेव दास किराडू

अविनाश कुमार शर्मा, एन.वी. पाटिल

भाकृअनुप- राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र

जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर-334001

(राजस्थान) दूरभाष : 0151-2230183

फैक्स : 0151-2970153

मुद्रक-किशन एन्टरप्राईजेज, बीकानेर मो. 982901850